भारतीय संत और सामाजिक समरसता

Kalpayita
Design Studio



सब घटिए कैआतमा, जाणेसो निका ।
आपा पर मेंचीहि ले, दरसन देपी का ॥
आए एकाकर सब, साई दियेपठाई ।
दादून्यारेइ धीरे, भिन भिन हैजाई ॥

- संत दादू दयाल

ल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



मन का होना मल रहित, इतना ही है धर्म।
बाकी सब केवल रहे, ठाट-बाट के कर्म॥

- संत तिरुवल्लुवर

कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio

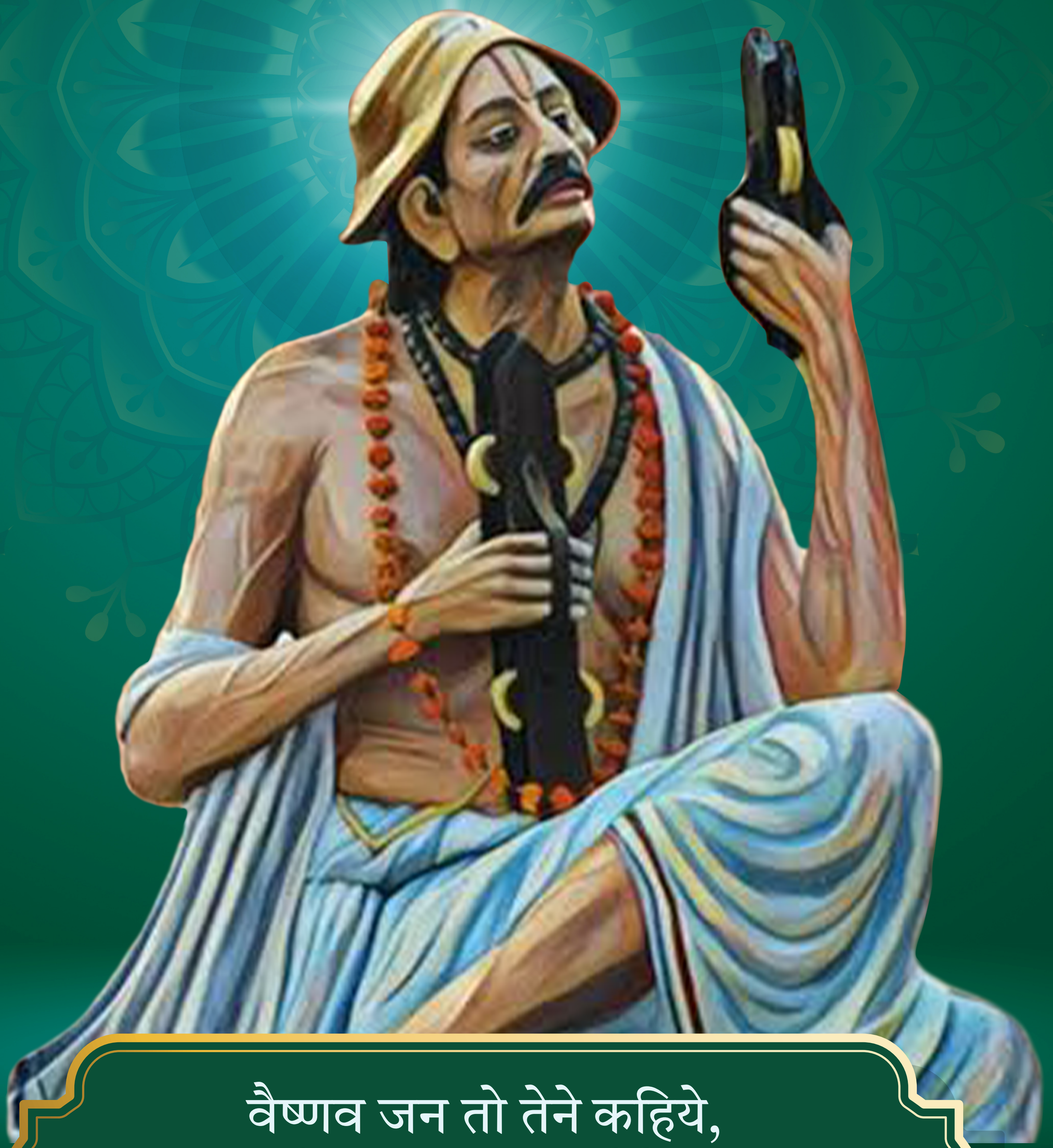


कहाँ कुछ जाती कहाँ कुछ पाती ।
राजाराम सेहू दीन राती ॥

सर्वभूतों में हरि याही एक सत्य ।
सर्व नारायण देखते हरि ।।

- संत नामदेव

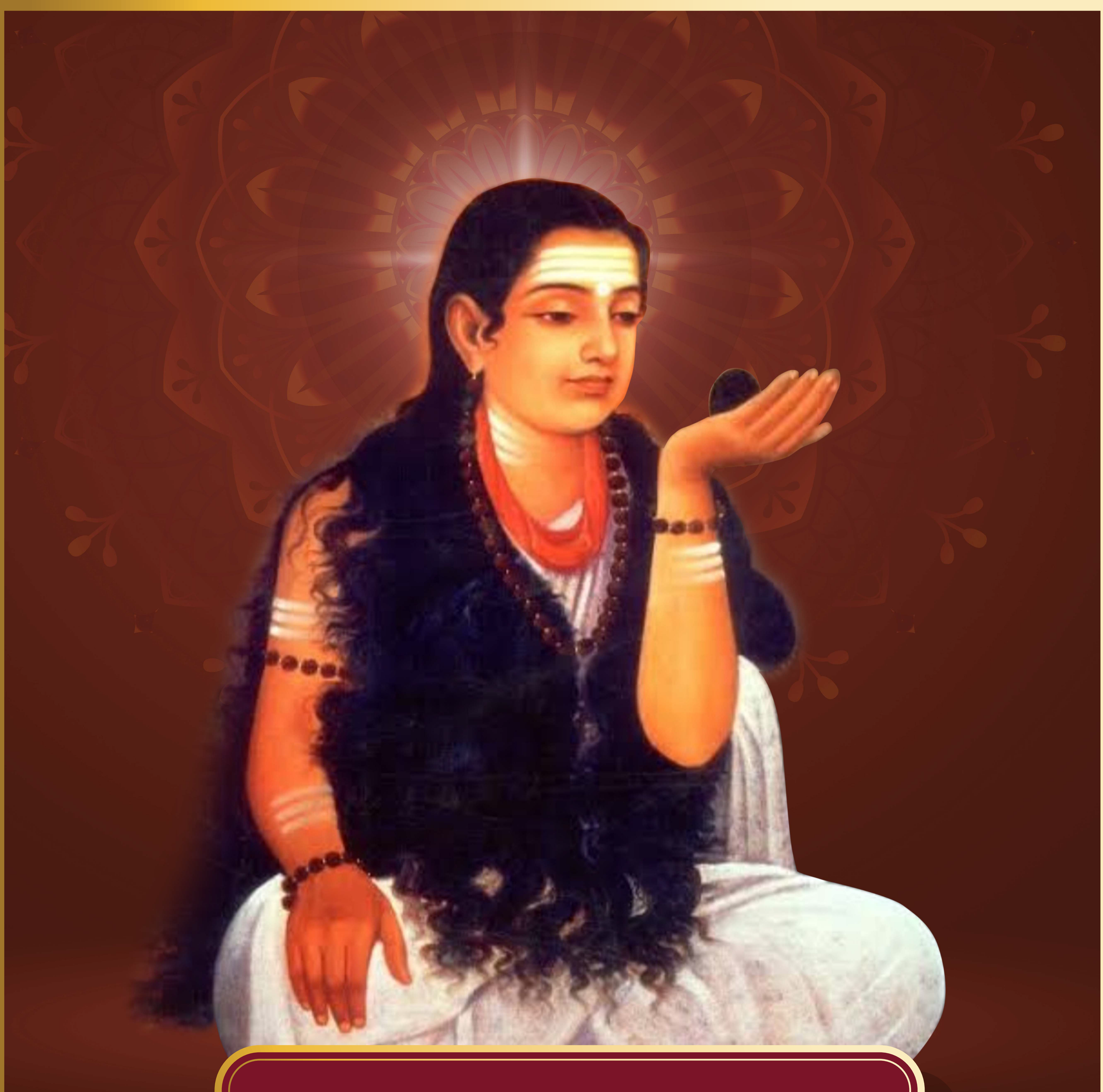
Kalpayita Design Studio



वैष्णव जन तो तेने कहिये,
जे पीड़ परायी जाणे रे;
परदुःखे उपकार करे,
पण मन अभि मान न आणे रे।

- नरसी मेहता

Kalpayita Design Studio



प्रेम जहाँ हो वहाँ उपेक्षा नहीं है भाई।
आपको जानता जो हो वह भूलता नहीं भाई।
सब में तुम, तुम में सब॥

- अक्कमहादेवी

कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



खा खा कर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी,
सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी साँकल बन्द द्वार की।

- ललेश्वरी

ल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



जाति-जाति में जाति हैं, जो केतन के पात,
रैदास मनुष ना जुड़ सके जब तक जाति न जात।

जाति एक जामे एकहि चिन्हा, देह अवयव कोई नहीं भिन्ना।
जीव कै जाति बर्न कुल नाहीं, जाति भेद हैं जग मूरखाई।

- संत रविदास

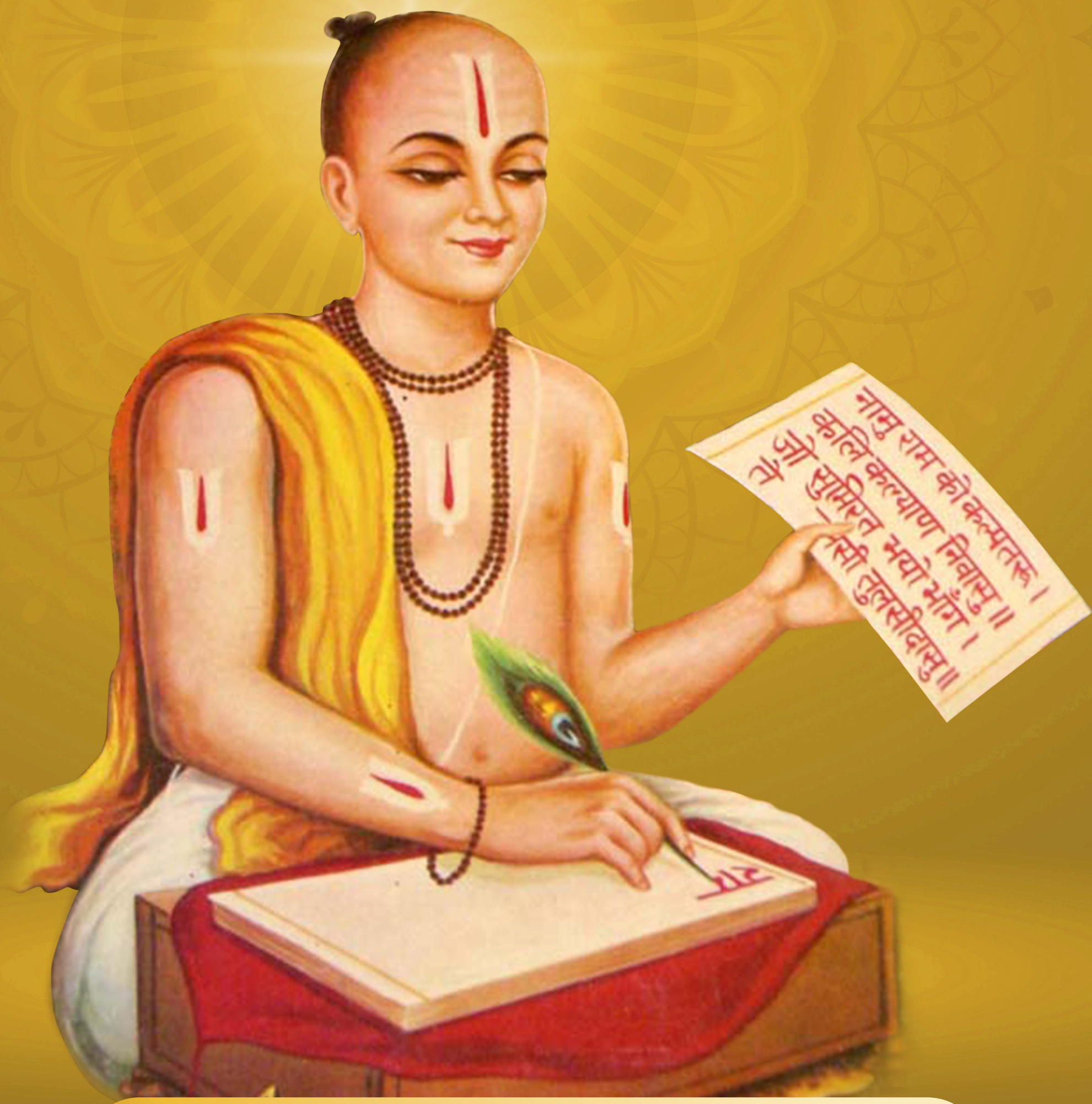
कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



सबहिन के हम सभी हमारे
जीव जन्तु मोहे लगे पियारे.
तीनों लोक हमारी माया अन्त
कतहुँ से कोई नहिं पाया ।।

- संत मलूकदास

कल्पयिता Kalpayita Design Studio



तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहुं ओर।
बसीकरन इक मंत्र है परिहरु बचन कठोर।।

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानउँ एक भगति कर नाता जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई।
धन बल परिजन गुन चतुराई।

- तलसीदासजी

Kalpayita Design Studio



हर देश में तू, हर भेष में तू,
तेरे नाम अनेक तू एक ही है।
तेरी रंग भूमि यह विश्व धरा,
सब खेल में, मेल में तू ही तो है।

- संत तुकडोजी महाराज

कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



जाणहु जोति न पुछहु जाती आगे जाति न है।
हुकमी उत्तम नीचु हुकमि लिखित दुखसुख पाई अहि
इकना हुकमी बक्शीस इकि हुकमी सदा भवाई अहि॥

एक ओकार ं सतिनाम, करता परखु निरभऊ।
निरबर, ै अकाल मरूति, अजनी, ू सभ ै गुर प्रसादि।।

- गुरु नानकदेव

ल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



किरपा वल्ली हाथ में राखे काहू तें दुरवचन न भाख
अमृत वचन बोलि बैठावें नर नारी लों पतित तिरावें

- सहजोबाई

ल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



जे का रंजले गांजले, त्यासी म्हणे जो आपले,
तोची साधू ओळखावा, देव तेथेंचि जाणावा।

- संत तुकाराम महाराज

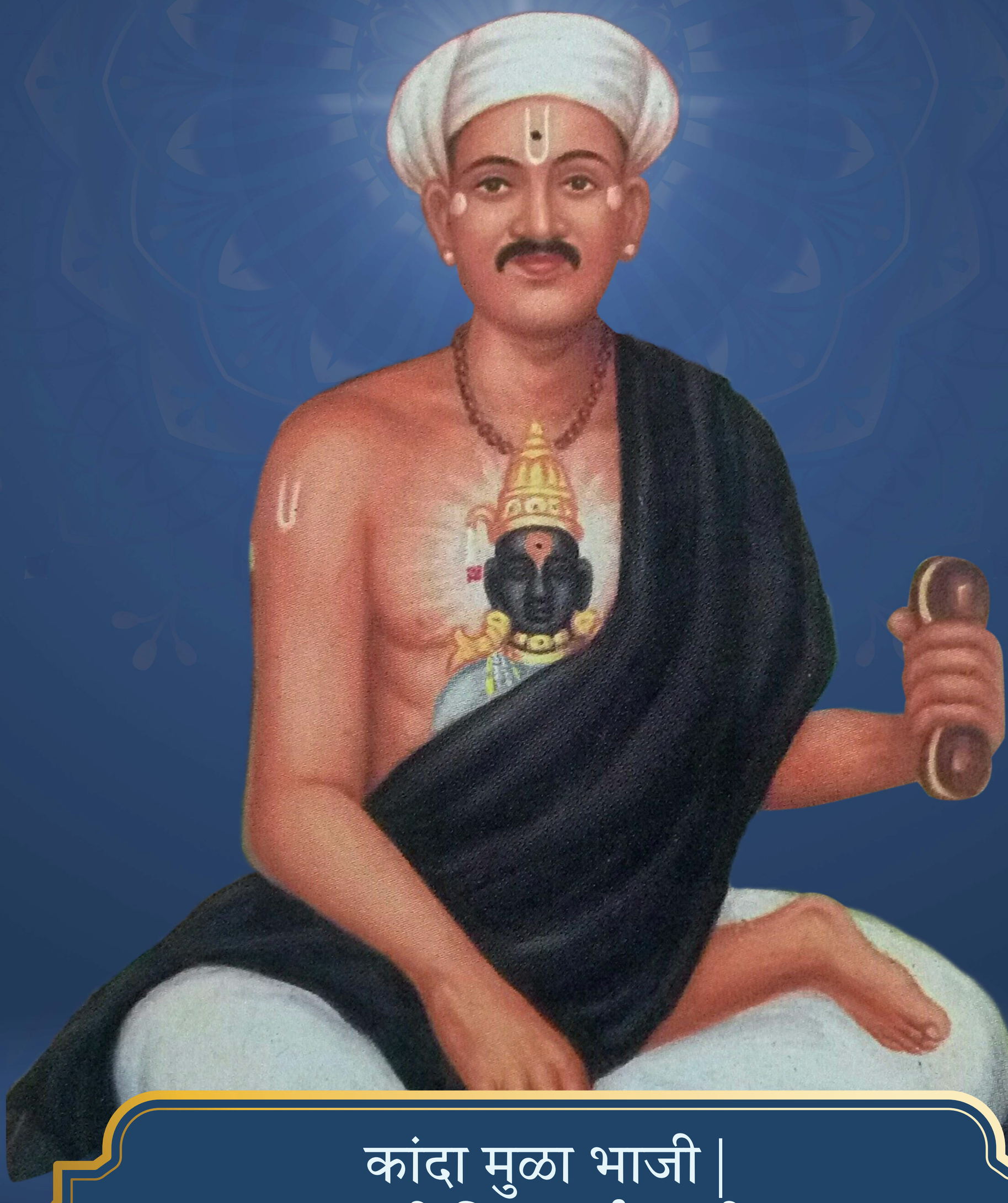
ल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



चैतन्य सर्वगत व्यापक सद्गुरु ।
प्रगटला हा 'तुकाराम' वेषे दातारु ।

- संत बहिणाबाई

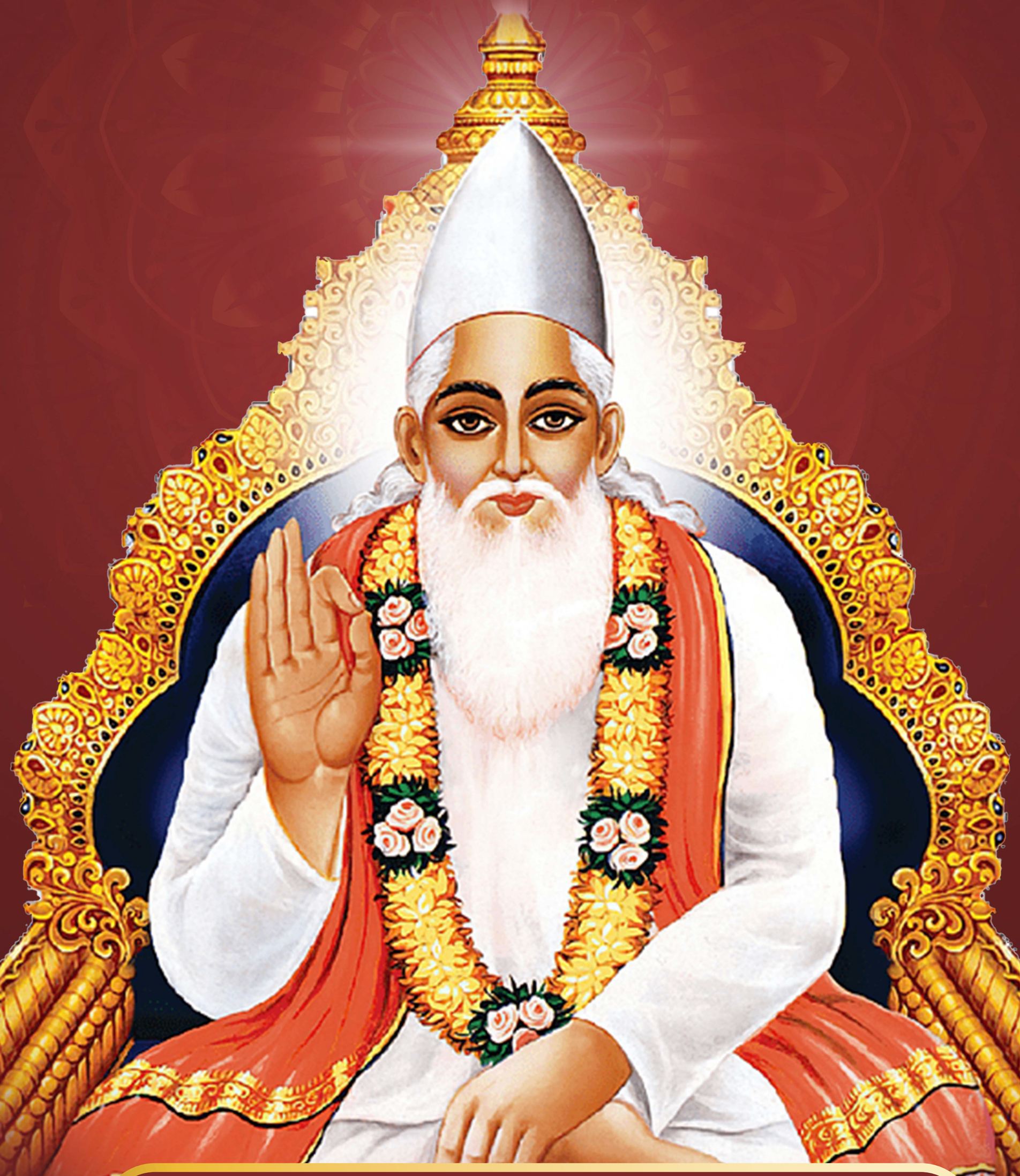
कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



कांदा मुळा भाजी |
अवघी विठाबाई माझी ॥
लसूण मिरची कोथिंबिरी ।
अवघा झाला माझा हरी ॥

- संत सावता माळी

Kalpayita Design Studio



कबीरा खड़ा बाजार में मांगे सबकी खैर।
ना काऊं से दोस्ती ना काऊं से बैर॥

- संत कबीर

कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



अहंकार असता काही।
भिन्नतेची प्रचिती येई॥
जो ज्या जवळी नाही।
तिथे कुठला भेदभाव ॥

- संत ज्ञानेश्वर

कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



विठु माझा लेकुरवाळा ।
संगे गोपाळांचा मेळा ॥

- संत जनाबाई

ल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



अंग लिंग में होकर एकमेक ।
समता शांति में होकर एकमेक ।
मन ज्ञान में होकर एकमेक ।
भाव निर्भाव में होकर एकमेक जो रह सकेगा,
वही शुद्ध शरण है गुहेश्वर ।

- संत अल्लम प्रभु

Kalpayita Design Studio



फटे पुराने गंदे कपड़ों में आए जंगम को,
हीन कनिष्ठ समझे तो वह पंच महापाप है।
इसलिए अन्न, वस्त्र, धन की दृष्टि से भेदभाव
दिखाऊ तो नरक में भेजेगा कुंडलसंगम देव॥

- संत बसेश्वर

कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



न येई ध्यानी साधिता साधनी ।
भक्तासी निर्वाणी धावतसे ॥
चारी वेद साही शास्त्रे शिणली ।
कान्होपात्रा लाधली प्रेमसुखे ॥

- संत कान्होपात्रा

कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



अनाथांचा नाथ रे, त्याला कैसी जात रे,
चोखामेळा संगे जेवी, दही दूध भात रे।

- संत रामदास

कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio



‘सव्वालाख से एक लढाऊ,
तभी गुरुगोविंद सिंह कहलावू’
कहते हुये समाज मे एक अलख जगया
धर्मप्रचार हेतू पंचप्यारे चूनते समय
खत्री, जाट, धोबी, शिंपी तथा कुंभार समाज से चूने

- गुरुगोविंद सिंह

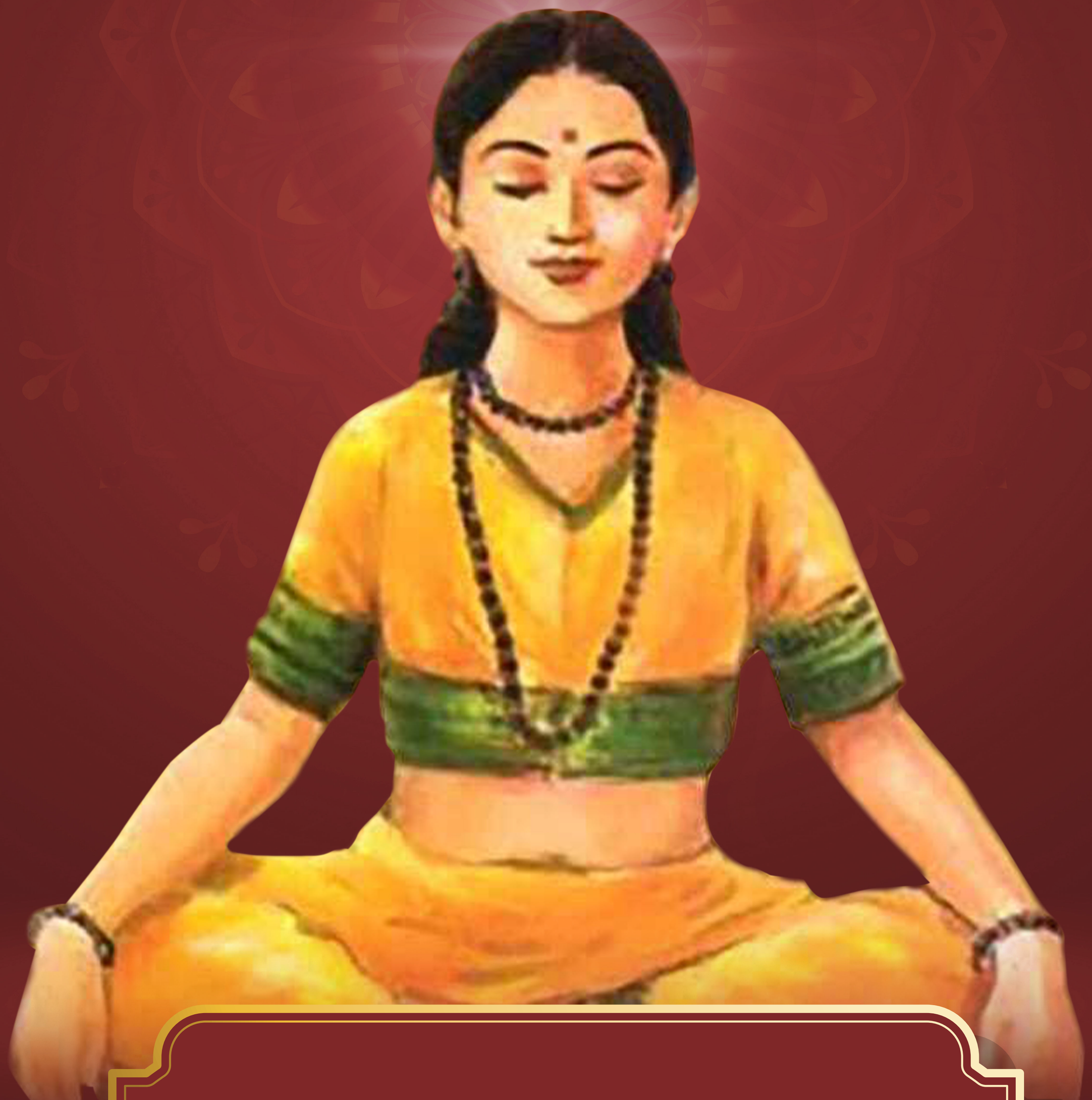
Kalpayita Design Studio



काय भुललासी वरलिया रंगा।
ऊस डोंगा परी रस नोहे डोंगा,
चोखा डोंगा परी भाव नोहे डोंगा।

- संत चोखामेळा

Kalpayita Design Studio



सुखसागरी वास झाला ।
उच्च नीच काय त्याला ॥

- मुक्ताबाई

कल्पयिता
Kalpayita
Design Studio

'चित्त विनोदिनी' ग्रंथ

वेश्यागर्भ समुत्पन्नो
वशिष्ठश्च महामुनीः।
दासीगर्भ समुत्पन्नो
नारदश्च महामुनीः।
कैवतीगर्भ (कोळी) समुत्पन्नो
व्यासश्च महामुनीः।
क्षत्रियगर्भ समुत्पन्नो
विश्वामित्रो महामुनीः॥
शृंगीगर्भ (हरिणी) समुत्पन्नो
ऋष्यश्रृंगो महामुनीः।
कुम्भीगर्भ समुत्पन्नो
अगस्त्यश्चैव महामुनीः।
शूद्रागर्भ समुत्पन्नो
कुशकश्च महामुनीः।
तपस्याद ब्राह्मणो भूयात्
तस्माज्जातिर्न कारणम्।

व्यथिता
Kalpayita
Design Studio

समरसता मंत्र

हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत् ।
मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम मंत्रः समानता ॥

भावार्थ

सभी हिन्दू सहोदर है अर्थात माँ जाये भाई है,
कोई भी हिन्दू नीच या पतित नहीं हो सकता हिंदुओं
की रक्षा मेरी दीक्षा है, समानता यही मेरा मंत्र है ।

रूपयिता
Kalpayita
Design Studio
976 757 5824